श्रावण मास - 30 जुलाई 2026 से 28 अगस्त 2026

कल्याणकारी देवाधिदेव महादेव-शिव हमारे इष्ट

शिव ही जीवन का आधार है, शिव ही मृत्युंजय है, शिव ही शक्ति के साथ संयुक्त होकर क्रिया को उच्चतम् स्वरूप प्रदान करने वाले देव हैं, और शिव ही औघड़दानी, संन्यासी, पारमेष्ठि गुरु, गुरुओं के गुरु आदि देव महादेव हैं।

देवाधिदेव महादेव शिव चेतना के सर्वोच्च शिखर पर आसीन है। शिव ब्रह्माण्ड के कण-कण में व्याप्त परम सत्य, अनंत ऊर्जा और साक्षात् चेतना हैं।

शिव का अर्थ ही कल्याण है, वे आदि हैं और अंत भी, वे शून्य हैं और अनंत भी। **शिव संहारक भी हैं और परम रक्षक भी।** जीवन के हर क्षेत्र चाहे वह गृहस्थ जीवन हो, वैराग्य हो, कला हो, या विज्ञान हो शिव हर जगह एक आदर्श के रूप में मार्गदर्शित करते हैं। भगवान शिव हमारे इष्ट हैं, इष्ट अर्थात् जो हमारी आत्मा के सबसे निकट हो, जिससे हम बिना किसी संकोच के जुड़ सकें और जो हमारे भीतर की आध्यात्मिक चेतना को जाग्रत करें।

भगवान शिव भोलेनाथ है, साधकों के प्रार्थना से बहुत जल्दी प्रसन्न होते है। उन्हें जो भी अर्पित किया जाये उसे वह सहर्ष स्वीकार कर लेते है। भगवान भोलेनाथ शिव की पूजा अर्चना में कठोर नियमों, शुद्धता, पूजन सामग्री इत्यादि का दिखावा नहीं है। भोलेनाथ शिव तो केवल एक लोटा जल, कुछ बेलपत्र और सच्ची श्रद्धा से प्रसन्न हो जाते हैं। वे बाहरी आडंबरों को नहीं, बल्कि भक्त के हृदय के भाव को देखते हैं। शिव का भोलापन और सुलभता ही उन्हें हर साधारण से साधारण मनुष्य का इष्ट बना देती है।

देवों के देव महादेव हैं शिव, वे केवल देवताओं के ही ईश्वर नहीं हैं, बल्कि वे दानवों, भूत-प्रेतों, यक्षों, गंधर्वों और समाज द्वारा बहिष्कृत किए गए जीवों के भी स्वामी हैं। जब समुद्र मंथन से अमृत निकला, तो उसे लेने के लिए देवता और असुर आपस में लड़ पड़े। लेकिन जब भयंकर हलाहल विष निकला, जिससे सृष्टि के विनाश का संकट पैदा हो गया, तब न तो देवता आगे आए और न ही असुर। उस समय केवल महादेव ने उस विष को सहर्ष स्वीकार किया और उसे अपने कंठ में धारण कर नीलकंठ कहलाए। जो संसार की भलाई के लिए जहर पीने का साहस रखता हो, वही सच्चा रक्षक हो सकता है। शिव का यह त्यागी और रक्षक स्वरूप ही उन्हें ब्रह्मांड का सर्वोच्च इष्ट बनाता है।

संसार में जीवन धारा के मुख्यतः दो मार्ग माने जाते हैं एक गृहस्थ का मार्ग और दूसरा संन्यास या वैराग्य का मार्ग। भगवान शिव इन दोनों मार्गों के परम समन्वयक हैं। वे एक ओर श्मशान में निवास करने वाले, भस्म रमाने वाले और परम वैरागी दिगम्बर हैं। तो दूसरी ओर वे माता पार्वती के साथ एक आदर्श पति और कार्तिकेय व गणेश के श्रेष्ठ पिता भी हैं। वे संसार के सभी सुखों के बीच रहते हुए भी उनसे पूरी तरह मुक्त रहने का ज्ञान प्रदान करते है।

शिव के स्वरूप का हर एक अंश हमें जीवन जीने की शिक्षा देता है। विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना नीलकंठ स्वरूप में, इच्छाओं और विकारों पर नियंत्रण रखना कामदेव दहन में, समानता और नारी शक्ति को सम्मान शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप में, सादगी और भौतिकता से विरक्ति कैलाश निवासी के स्वरूप में, अहंकार का नाश और मृत्यु की स्वीकार्यता शिव के महाकाल स्वरूप में, निरंतर सजगता और ध्यान शिव के योगी स्वरूप में।

जीवन का परम सत्य हैं शिव, देवाधिदेव महादेव शिव का महात्मय शब्दों की सीमा से परे है। वे केवल एक अलौकिक शक्ति नहीं, बल्कि हमारे भीतर बैठी हमारी अपनी आत्मा हैं। आदि गुरु शंकराचार्य ने निर्वाणषट्कम में कहा है –

चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्...

हमारे चित्त, हमारी आत्मा, हमारे रक्त कण-कण में गुरु स्वरूप में, सद्गुरु स्वरूप में शिव ही विद्यमान है। शिव आत्मा में निवास करते है, उन्हें बाहर नहीं अन्दर ही पाया जा सकता है। **शक्ति भी शिव को ही प्राप्त होती है, आत्मा में विराजित शिव से आत्मसात् करके ही शक्ति को प्राप्त किया जा सकता है। भीतर के अज्ञान, अहंकार, वासना और क्रोध का संहार करते हैं, तब हमारे भीतर साक्षात् शिव और शक्ति का प्राकट्य होता है।**

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं।
न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि।।

शक्ति के साथ संयुक्त होकर ही शिव सृष्टि की रचना करने में समर्थ होते हैं; अन्यथा वे स्पन्दन करने में भी समर्थ नहीं।

शिव और शक्ति अर्थात् चेतना और ऊर्जा का मिलन ही सृष्टि का आधार है। शिव चेतना हैं और शक्ति क्रिया। शिव शान्त महासागर हैं तो शक्ति उसकी लहरें। शिव बीज हैं तो शक्ति उसका अंकुरण। शिव अग्नि हैं तो शक्ति उसकी ज्वाला।

शिव का अर्धनारीश्वर स्वरूप मानव जाति को स्पष्ट सन्देश है कि इस संसार में पुरुष और स्त्री एक-दूसरे के विरोधी नहीं, पूरक हैं। सृष्टि दोनों के सामंजस्य से चलती है। जहां केवल कठोरता हो वहां जीवन सूख जाता है, और जहां केवल भावुकता हो वहां स्थिरता नहीं रहती। शिव और शक्ति का मिलन संतुलन का प्रतीक है।

मनुष्य के भीतर जो साहस, प्रेरणा, उत्साह, प्रेम, ज्ञान और करुणा है, वही शक्ति है। जब यह शक्ति शिव अर्थात् चेतना से जुड़ती है, तब चेतना जाग्रत स्वरूप हो जाती है।

हमारे भीतर के राक्षस हैं – काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और ईर्ष्या। शिव और शक्ति की साधना मनुष्य को इन विकारों से मुक्त करती है।

प्रत्येक मनुष्य के भीतर शक्ति सुप्त अवस्था में विद्यमान है। साधना, मंत्र जप से शक्ति जाग्रत होती है और जाग्रत उर्ध्वमुखी शक्ति सहस्रार में स्थित शिव से मिलती तो मनुष्य को आत्मबोध होता है।

शिव आदियोगी हैं। योग का प्रथम ज्ञान उन्होंने ही प्रदान किया। ध्यान मनुष्य को स्वयं से जोड़ता है। जब मन शांत होता है, तब भीतर की चेतना प्रकट होने लगती है।

शिव की साधना केवल धार्मिक क्रिया नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग है।

देवाधिदेव महादेव हमारे इष्ट हैं, हमारे गुरु हैं और हमारे जीवन का अंतिम गंतव्य हैं। हर हर महादेव।

शिवाभिषेक

शिवलिंग का जलाभिषेक सृष्टि में सृजन को निरूपित करता है क्योंकि जिस ग्रह पर जल नहीं है, वहां जीवन भी नहीं है ओर जहां जीवन है उसकी आत्मा शिव ही है। शिव से एकाकार होने के लिये, एकोऽहम् बहुस्याम होने के लिए जल अति आवश्यक है। जल के अलावा अन्य स्निग्ध द्रव्य भी अर्पित किए जाते हैं शिव को। जैसे शर्करा, दुध, दही, मधु और घृत।

घृत यज्ञ हेतु हवि में प्रयोग किया जाता है एवं मधु, दूध, दही, शर्करा पंचामृत में प्रयोग किए जाते हैं। ये सारे तत्व मिठास, पौष्टिकता, स्वास्थ्य, मूलभूत तौर पर आनन्द को निरूपित करते हैं।

शिव को इन तत्वों को समर्पित करने का भी कारण है। जो शिव को समर्पित किया जाता वही दुबारा से ग्रहण भी किया जाता है। शिव का अभिषेक मनुष्य के मन को वापस लौटता है क्योंकि आनन्द के स्रोत का जब अभिषेक किया जाएगा तो आनन्द ही मिलेगा – सत चित आनन्द – सत अर्थात् सत्य, चित यानि चित शक्ति और आनन्द शिव हैं, भोले नाथ, रसेश्वर।